बौद्ध साहित्य (Buddhist Literature)

प्राचीन भारत के इतिहास के साधन के रूप में बौद्ध साहित्य का बहुत महत्व है। बौद्ध साहित्य तीन प्रकार के हैं जातक, त्रिपिटक और निकाय। इनमें जातक सबसे प्राचीन है। जिसमें गौतम बुद्ध के जीवन की कहानियों और घटनाओं का वर्णन है।

जातक के बाद त्रिपिटक का स्थान है। इनके नाम सुतपिटक, विनयपिटक और अभिधम्मपिटक हैं। सुतपिटक में बुद्ध के धार्मिक विचारों और वचनों का संग्रह है। विनयपिटक में बौद्ध संघ से संबन्धित नियमों का उल्लेख है और अभिधम्मपिटक में बौद्ध के सिद्धान्तों का वर्णन है। लंका में रचित महावंश और दीपवंश में भारत के प्राचीन इतिहास पर प्रकाश डाला है।

जैन साहित्य (Jain Literature) जैन साहित्य में विशाखदत्त कृत 'मुद्राराक्षस' से हमें चन्द्रगुप्त मौर्य व उसके गुरु चाणक्य (कौटिल्य) के विषय में जानकारी प्राप्त होती है। चाणक्य के अर्थशास्त्र से हमें सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक व आर्थिक जीवन की जानकारी मिलती है। हरिषेण का "इलाहाबाद लेख", कालिदास के "शाकुंतल" और "मेघदूत", महाकवि भास के "स्वप्नवासवदत्ता" और "प्रतिज्ञायौगंधरायण" नाटक, हर्ष द्वारा रचित "नागानन्द" रत्नावली और प्रियदर्शिका, चन्दबरदाई —

* स्मृतियाँ (The Smritis)

सूत्र साहित्य के बाद स्मृतियों की
रचना हुई। स्मृतियों में राजा के अधिकारों, कर्तव्यों, ये
के सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक विधानों की चर्चा है। डॉ०
ग्रन्थ हमें हिन्दू समाज के संबन्ध में जानकारी देती है। डॉ०
बूहलर के अनुसार "मनुस्मृति" की रचना 200 ई० पूर्व से 200
ई० के मध्य हुई होगी। इसके बाद अन्य स्मृतियों की रचना
हुई। मनु के अतिरिक्त नारद, बृहस्पति, विष्णु तथा याज्ञवल्क्य
की स्मृतियाँ हिन्दु समाज के जीवन के सम्बन्ध में जानकारी
देती है।